"निष्कर्मता"

• करम करत होवै निहकरम । तिस बैसनो का निरमल धरम । काहू फल की इच्छा नही बाछै । केवल भगति कीरतन संग राचे । (5-274)

अर्थः- उस वैष्णव का धर्म भी पवित्र है जो धर्म के काम करता हुआ इन कामों के फल की इच्छा नहीं रखता । जो मनुष्य निरा भक्ति व कीर्तन में मस्त रहता है, और किसी भी फल की ख्वाइश नहीं करता ।

• निरगुण सरगुण आपे सोई । तत पछाणै सो पडित होई । आपि तरै सगले कुल तारै हरि नाम मनि वसावणिआ ।

अर्थः- वह परमात्मा स्वयं ही उस स्वरूप वाला है जिसमें माया के तीन गुणों का लेस मात्र भी अस्तित्व नहीं होता । स्वयं ही उस स्वरूप वाला है जिसमें माया के तीन गुण मौजूद हैं । आकार - रहित भी स्वयं ही है, और इसका दिखाई देता आकार भी खुद ही है । जो मनुष्य उसके असल को पहचानता है उस असले के साथ सांझ डालता है, वह पण्डित बन जाता है । वह मनुष्य खुद संसार समुंदर से पार लांघ जाता है, वह सदा परमात्मा के नाम को अपने मन में बसाए रखता है ।

हउ वारी जीउ वारी हरि रस चखि साद पावणिआ । हरि रस चाखहि से जन निरमल निरमल नाम धिआवणिआ ।1।रहाउ।

अर्थः- मैं उन लोगों से सदा कुर्बान जाता हूँ जो परमात्मा का नाम रस चख के उसका आत्मिक आनंद लेते हैं । जो मनुष्य हरि नाम का रस चखते हैं, वे पवित्र आत्मा हो जाते हैं, वे पवित्र प्रभु का नाम सदा स्मरण करते हैं ।

सो निहकरमी जो सबद बीचारे । अंतरि तत गिआन हउमै मारे । नाम पदारथ नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ।2।

अर्थः- जो मनुष्य गुरु के शब्द को अपने मन में बसाता है, वह दुनिया के कार्य - व्यवहार वासना रहित हो के करता है । उसके अंदर जगत का मूल प्रभु प्रगट हो जाता है । वह गुरु के बख्शे ज्ञान की सहायता से अपने अंदर के अहंकार को दूर कर लेता है । वह परमात्मा का नाम खजाना ढूंढ लेता है जो उसके वास्ते दुनिया के नौ खजाने ही हैं । इस नाम पदार्थ

की इनायत से वह माया के तीन गुणों का प्रभाव मिटा के प्रभु चरणों में लीन रहता है ।

हउमै करै निहकरमी न होवै । गुर परसादी हउमै खोवै । अंतरि बिबेक सदा आप वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ।3।

अर्थः- जो मनुष्य "मैं करता हूँ मैं करता हूँ" की रट लगाए रखते हैं, वे वासना रहित नहीं हो सकते । गुरु की कृपा से ही कोई विरला मनुष्य अहंकार को दूर कर सकता है । जो मनुष्य अहम् को दूर कर लेता है उसके अंदर अच्छे - बुरे कामों की परख की सूझ पैदा हो जाती है । वह सदा अपने आत्मिक जीवन को विचारता रहता है ।

हरि सर सागर निरमल सोई । संत चुगहि नित गुरमुखि होई। इसनान करहि सदा दिन राती हउमै मैल चुकावणिआ ।4।

अर्थः- हे भाई ! वह परमात्मा ही पवित्र मानसरोवर है, पवित्र समुंदर है पवित्र तीर्थ है, संत जन गुरु की शरण पड़ के उस में से सदा प्रभु नाम रूपी मोती चुगते रहते हैं । संत जन सदा दिन रात उस सरोवर में स्नान करते हैं, तथा अपने अंदर से अहंकार की मैल उतारते रहते हैं ।

निरमल हंसा प्रेम पिआर । हरि सरि वसै हउमै मार । अहिनिस प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ।5।

अर्थः- वह मनुष्य जैसे साफ सुथरा हंस है, जो प्रभु के प्रेम प्यार में टिका रहता है । वह अपने अंदर से अहंकार को दूर करके परमात्मा सरोवर में बसेरा बनाए रखता है । गुरु के शब्द द्वारा वह दिन - रात सदा स्थिर परमात्मा में प्रीति पाता है, और इस तरह परमात्मा सरोवर में निवास हासिल किए रखता है ।

मनमुख सदा बग मैला हउमै मल लाई । इसनान करै पर मैल न जाई । जीवत मरै गुरसबदि बीचारै हउमै मैल चुकावणिआ ।6।

अर्थः- पर, जो मनुष्य अपने मन के पीछे चलता है, वह मानो बगुला है । वह सदा मैला है उसके अंदर अहंकार की मैल लगी रहती है । वह तीर्थों पे स्नान भी करता है पर इस तरह उसकी अहम की मैल दूर नहीं होती । जो मनुष्य दुनिया के कार्य - व्यवहार करता हुआ ही स्वै भाव को मारे रहता है, जो गुरु के शब्द अपने अंदर टिकाए रखता है, वह अपने अंदर से अहंकार की मैल दूर कर लेता है ।

रतन पदारथ घर ते पाइआ । पूरै सतिगुर सबद सुणाइआ । गुर परसादि मिटिआ अंधिआरा घटि चानण आप पछानणिआ ।7।

अर्थः- जिस मनुष्य को अचूक गुरु ने परमात्मा की महिमा का शब्द सुना दिया, उस ने प्रभु का नाम रूपी कीमती रत्न अपने हृदय में से ही ढूँढ लिया । गुरु की कृपा से उसके अंदर से अज्ञानता का माया के मोह का अंधकार मिट गया । उसके हृदय में आत्मिक जीवन वाला प्रकाश हो गया । उसने आत्मिक जीवन को पहचान लिया ।

आपि उपाए तै आपे वेखै । सतिगुर सेवै सो जन लेखै । नानक नाम वसै घट अंतर गुर किरपा ते पावणिआ ।8।31।32।
(3-128-129)

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा खुद सब जीवों को पैदा करता है और खुद ही सब की संभाल करता है । जो मनुष्य गुरु का आसरा लेता है, वह परमात्मा की दरगाह में स्वीकार हो जाता है । हे नानक ! उसके हृदय में

परमात्मा का नाम बस जाता है, गुरु की कृपा से वह परमात्मा का मिलाप हासिल कर लेता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"